Indian J.Soc & Pol. 03(03):2016:73-80 **ISSN 2348-0084 (PRINT)**
(Special Print Issue: September, 2016) **ISSN 2455-2127(ONLINE)**

ग्लोबल वार्मिंग पर उच्च शिक्षारत छात्रों की जागरूकता

(आर0एम0पी0 महाविद्यालय सीतापुर, उ0प्र0 के छात्रों का एक अध्ययन)

रजनीकान्त श्रीवास्तव[1]

[1]सहा0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,आर0एम0पी0 (पी0जी0) कालेज, सीतापुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

ग्लोबल वार्मिंग आज सबसे ज्वलन्त राष्ट्रीय मुद्दा बन चुका है जो कि सारे विश्व की मानव जाति के लिए भयावह होने के साथ–साथ जीव जन्तुओं एवं वनस्पतियों पर भी नकारात्मक एवं विनाशकारी प्रभाव डाल रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व के सभी छोटे बडे राष्ट्र ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए चिंतित है और अन्तर्राष्ट्रीय वार्तायें भी जारी है लेकिन सामान्य जन को न तो इस समस्या के बारे मे अधिक जानकारी है और न तो उनमे कोई जागरूकता।शिक्षा जागरूकता लाने का सबसे सशक्त माध्यम है और शिक्षित युवाओं पर ग्लोबल वार्मिंग की चुनौतियों से निपटने का दायित्व सर्वोपरि है। ग्लोबल वार्मिंग के लिए औद्योगिक इकाईयॉ जितनी जिम्मेदार है उतना ही जिम्मेदार इस पृथ्वी पर रहने वाला हर मनुष्य है। ग्लोबल वार्मिंग के बारे मे जागरूकता लाने के लिए विश्वविद्यालयों में पर्यावरण संरक्षण के जुड़े कई कार्यक्रम संचालित है। उत्तर प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में माननीय न्यायालय के आदेशो के अनुक्रम में पर्यावरण अध्ययन का एक अनिवार्य प्रश्न पत्र विगत कई वर्षो से शामिल किया जा चुका है। इसी क्रम में यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद में स्थित सबसे अग्रणी आर0एम0पी0 महाविद्यालय के 50 छात्रों पर ग्लोबल वार्मिंग पर किये गये एक सर्वेक्षण पर आधारित है। सर्वेक्षण के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुये कि पर्यावरण अध्ययन की अनिवार्यता के बावजूद उन्हे ग्लोबल वार्मिंग के सम्बन्ध में उन्हे कोई मौलिक जानकारी नही है और इससे निपटने के लिए उनमे कोई जागरूकता नही है। छात्र–छात्रायें पर्यावरण अध्ययन को डिग्री पाने की विवशता के रूप में उत्तीर्ण करते है। यह शोध पत्र जनपद में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों पर छात्र–जागरूकता और सौर ऊर्जा को विकल्प के सम्भावनाओं के रूप में विश्लेषित करने का प्रयास करता है।

***KEY WORDS:** पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग, किशोर वय छात्र*

पृथ्वी की सतह का तापमान लगातार बढ़ रहा है जिससे वैज्ञानिक शब्दावली में ग्लोबल वार्मिंग के नाम से जाना जाता है। ग्लोबल वार्मिंग एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा है जिसका सीधा सम्बन्ध स्थानीय स्तर के प्रत्येक व्यक्ति और गतिविधि से है। ग्लोबल वार्मिंग का दुष्प्रभाव न केवल मनुश्यों पर बल्कि पशु–पक्षियों, जीव–जन्तुओं एवं वनस्पतियों और पेड़–पौधो पर सीधा पड़ रहा है जिसकी भयावहता का सिर्फ अनुमान लगाया जा सकता है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ग्लैशियरों का पिघलना, ऋतुओं में असामयिक परिवर्तन दुर्लभ प्रजाति के जीवों का विलुप्त होना जैसेग्लोबल वार्मिंग के कई भयानक परिणाम हमारे समक्ष चुनौती बनकर खड़े है।

पृथ्वी आज ग्रीन हाउस प्रभाव की चपेट में है जिसके कारण वायुमण्डल में कुछ विशेष गैसो की मात्रा इतनी बढ़ गयी है कि वायुमण्डल से ऊष्मा का बाहर जाना कठिन हो गया है। कार्बन डाई आक्साइड, मेथेन और नाइट्रस आक्साइड वे प्रमुख गैसे है जिनके कारण पृथ्वी का औसत तापमान निरन्तर बढ़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के उत्तरदायी कारको में एक ओर जहॉ बडी औद्योगिक इकाई से होने वाला वायु प्रदूषण का विशाल स्तर है वही दूसरी ओर ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए जीवाश्म ईधन का प्रयोग, वनो की कटान और प्राकृतिक संसाधनो का अंधा–धुंध दोहन बहुत हद तक उत्तरदायी है।

ग्लोबल वार्मिंग को लेकर आज सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय जगत में चिंता व्याप्त है और ग्लोबल वार्मिंग के निपटने, ओजोन परत के संरक्षण, ग्रीन हाउस गैसो को नियत्रित करने और पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी देश एकजुट होकर प्रयास कर रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निरन्तर ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए प्रयास किये जा रहे है। लेक सेक्स सम्मेलन 1949, स्टॉकहोम सम्मेलन 1972, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू0एन0ई0पी0) के अन्तर्गत हुई संधियॉ, अर्जेटीना जल सम्मेलन 1977, नैरोबी घोषणा 1982, रिओ पृथ्वी सम्मेलन 1992, पृथ्वी शिखर सम्मेलन न्यूयार्क जून 1997,

1.Corresponding Author

जोहानिसवर्ग पृथ्वी सम्मेलन 2002, इस दिशा में कुछ उल्लेखनीय प्रयास है।(सिंघल,2006 पृ309–310)

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एजेन्डा–21, जलवायु परिवर्तन सन्धि, क्यूटो प्रोटोकाल (16 जनवरी 2005 से प्रभावी) जैसे समझौतो से निष्चय ही ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए एक अच्छी शुरूआत हुई हैं।(फाड़िया,2008 पृ 236) संयुक्त राष्ट्र के प्रयत्नो से विश्व के सभी राष्ट्रो पर लागू होने वाले 'जलवायु परिवर्तन पर अन्तर्राष्ट्रीय समझौता 2015'(Retrived from www.un.org) से भी बहुत आशायें है लेकिन अभी भी स्थित चिन्ताजनक है। इस दिशा में उल्लेखनीय सफलता न मिल पाने का एक बड़ा कारण यह है कि आम जन को इस समस्या के बारे में न तो कोई जानकारी है और न जागरूकता स्थानीय स्तर पर सरकारों कों भी ग्लोबल वार्मिंग जैसे गम्भीर मुद्दे में न तो कोई रूचि है और न तो इसके लिए प्रयत्नशील है। ऐसी चिन्ताजनक दशा में ग्लोबल वार्मिंग पर लोगो को अधिक से अधिक जागरूक करना और उन्हे इसके दुष्परिणामों से अवगत कराना सरकार का नैतिक और वैधानिक दायित्व है। शिक्षा इस दिशा में बड़ी भूमिका निभा सकती है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 18 दिसम्बर 2003 को जनहित याचिका पर दिये गये एक निर्णय पर एन0सी0ई0आर0टी0 को पर्यावरण शिक्षा के सम्बन्ध में माडल पाठ्यक्रम बनाने के लिये निर्देशित करते हुए इसे अनिवार्य विषय में बनाने और विश्व विद्यालय अनुदान आयोग को पर्यावरण शिक्षा को लागू करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने को कहा।(रिट सं0 सिविल 860/1991) सर्वोच्च न्यायालय ने 13 जुलाई 2004 को यह निर्देशित किया कि एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा पर्यावरण शिक्षा के लिये बनाये गये पाठ्यक्रम कों सभी राज्यों के कक्षा–1 से कक्षा–12 तक के सभी स्कूलो में लागू किया जाये।(सीतापुर विकास पुस्तिका 2014) सर्वोच्च न्यायालय के आदेशो के अनुपालन में विश्व विद्यालय अनुदान आयोग और विश्व विद्यालयों द्वारा जारी आदेशों के तहत उ0प्र0 के सभी महाविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य विषय है जिसको उत्तीर्ण करने पर ही छात्र को स्नातक की उपाधि मिलती है।

शिक्षा जागरूकता लाने का सबसे सशक्त माध्यम है और शिक्षित युवाओं पर ग्लोबल वार्मिंग की चुनौतियों से निपटने का दायित्व सर्वोपरि है। शोधकर्ता ने उत्तर प्रदेश के जनपद सीतापुर में स्थित आर0एम0पी0 महाविद्यालय में स्नातक स्तर के 50 छात्रों का सर्वेक्षण करते हुए ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण संरक्षण पर उनकी जानकारी और जागरूकता का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।जनपद सीतापुर उत्तर प्रदेश के मध्य में लखनऊ मण्डल का एक भाग है जो लखनउ से उत्तर में $27^0 6''$ व $27^0 54''$ अंक्षाश तथा पूर्व में $80^0 18''$ व $81^0 24''$ देशान्तर के मध्य स्थित है।(सांख्यिकीय पत्रिका 2012) सीतापुर की अधिकाश जनसंख्या गांव में निवास करती है और भोगौलिक दृष्टि से इसकी गणना तराई क्षेत्र मे होती है। जनपद का 5.8 हेक्टेअर वन क्षेत्र और 496.2 हेक्टेअर कृषि क्षेत्र में आच्छादित है।शोध पत्र में इन तथ्यों का भी पता लगाने का प्रयास किया गया है कि सीतापुर जनपद के नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों और पर्यावरणीय परिवर्तनों के सम्बन्ध में छात्रों के संज्ञान की क्या स्थिति है।यह शोध पत्र जनपद में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों पर छात्र–जागरूकता और सौर ऊर्जा को जीवाश्म ईधन जनित ऊर्जाके विकल्प की सम्भावनाओं के रूप में विश्लेषित करने का प्रयास करता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों की पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग सम्बन्धी जागरूकता को लेकर शोध किये गये है। इस क्रम में ए0 वसर्ले और जी0 स्कजीपीस ने अपने शोध पत्र "इनवायरनमेन्टल एटीट्यूड्स आफ सीनियर सेकेन्डरी स्कूल इन साउथ आस्ट्रेलिया" में छात्रों के पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग सम्बन्धी दृष्टिकोणो व जानकारियों का अध्ययन किया है। डी0 रीड, ए0 बोस्ट्राम, एम0जी0 मोरगन, बी0 फिसचाफ्स और टी0 स्मट्र्स ने आम शिक्षित व्यक्तियों पर सर्वेक्षण करके महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले है।

शोध प्रश्न

इस शोध पत्र में निम्नलिखित प्रश्नों के विश्लेषण का प्रयास किया गया है।

1. महाविद्यालय छात्रों की पर्यावरण पर जानकारी की क्या स्थिति है और उनकी नगरीय और ग्रामीण स्थिति का उनकी पर्यावरणीय जानकारी पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. ग्लोबल वार्मिंग पर जागरूकता में महाविद्यालय की भूमिका क्या प्रभावी रही है और नगरीय और ग्रामीण छात्रों पर इसका क्या प्रभाव हुआ है?
3. नगरीय व ग्रामीण छात्र अपने क्षेत्रों में ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले पर्यावरणीय परिवर्तनों के सम्बन्ध में कैसा अनुभव करते है?
4. सौर ऊर्जा के प्रयोग की नगरीय और ग्रामीण क्षेत्र में क्या स्थिति है?

शोध प्रविधि

यह शोध सर्वेक्षण की पद्धति पर आधरित है जिसमें उत्तर प्रदेष के जनपद सीतापुर स्थित अनुदानित आर0एम0पी0 महाविद्यालय (सम्बद्ध छत्रपति शाहू जी महराज वि0वि0कानपुर) में 50 छात्रों से प्रश्नावली के द्वारा पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग से

सम्बन्धित जानकारी एकत्र की गयी है। 25 छात्र ग्रामीण अंचल से और 25 छात्र नगरीय अंचल से दैव निदर्शन प्रणाली से चुने गये है। चुने गये छात्रों में से 25 छात्र विज्ञान संकाय और 25 छात्र कला संकाय के है। इस प्रकार चुने गए 50 छात्रों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन कर तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक स्रोतो से प्राप्त जानकारी के वैज्ञानिक और सांख्यिकी विष्लेशण से मौलिक निष्कर्ष निकाले गए है।

Table .1

Profile of Respondents

(उत्तरदाताओं की शैक्षिक व निवास की स्थिति)

		Rural		Urban		
Institution Name	Course	No.	%	No.	%	Total
RMP PG College	B A	13	52%	12	48%	25
	B.Sc	12	48%	13	52%	25
Total		25	100%	25	100%	50

सारणी से स्पष्ट है कि सभी उत्तरदाता एक ही संस्था के छात्र है जिनमें ग्रामीण क्षेत्र के 25 और नगरीय क्षेत्र के 25 छात्रों का सर्वेक्षण किया गया है। शैक्षणिक दृष्टि से इन्हे कला और विज्ञान वर्ग में बाटा गया है। दोनो वर्गो से समान प्रतिनिधित्व रखा गया है। इन सभी उत्तरदाताओं के लिए पर्यावरण अध्ययन एक अनिवार्य विषय है।

Table- 2

Status of Environmental Study in Institution

(संस्था में नगरीय व ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण अध्ययन की स्थिति)

Srl		Ans.	R	%	U	%	Total	%	Chi -Sq
1	पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक खरीदी है?	Y	1	4%	3	12%	4	8%	.609
		N	24	96%	22	88%	46	92%	
2	संस्था में पर्यावरण अध्ययन के नियमित शिक्षक नियुक्त है?	Y	0	0%	0	0%	0	0%	.247
		N	19	76%	23	92%	42	84%	
		DK	6	24%	2	8%	8	16%	
3	पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम मे प्रयोगिक कार्य शामिल है?	Y	0	0%	0	0%	0	0%	.037*
		N	21	84%	25	100%	46	92%	
		DK	4	16%	0	0%	4	8%	
4	पर्यावरण अध्ययन विशय उत्तीर्ण करना एक विश्वविद्यालय की औपचारिकता मात्र है?	Y	20	80%	17	68%	37	74%	.105
		N	3	12%	8	32%	11	22%	
		DK	2	8%	0	0%	2	4%	

Y=हॉ, N=नही,DK= कह नही सकते R= ग्रामीण, U=नगरीय * → Significant at5% level

नोट: : →प्रत्येक वर्ग में उत्तरदाताओं द्वारा चयनित विकल्प का प्रतिषत

तालिका संख्या–1 से स्पष्ट है कि पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य पुस्तक खरीदने वाले छात्रों की संख्या नगण्य है और अधिकांश छात्रों ने स्वीकार किया है कि संस्था में पर्यावरण अध्ययन के नियमित शिक्षक नियुक्त नही है। पर्यावरण अध्ययन में कोई प्रयोगिक कार्य न रखना निराशाजनक है 74प्रतिशत छात्र–छात्रायें मान रहे है कि पर्यावरण अध्ययन उनके लिए

औपचरिकता मात्र है। नगरीय तुलना में ग्रामीण छात्रों में पुस्तक न खरीदने वालो का प्रतिशत अधिक है और नगरीय छात्रों की तुलना में वे अधिक सहमत है कि पर्यावरण अध्ययन एक विश्वविद्यालयी औपचारिकता है। इसका कारण सम्भवतः गांवो में व्याप्त अशिक्षा और शैक्षिणक जागरूकता में कमी है।

Table- 3

Institution as a Resource of Awareness towards Global Warming and it's Impact(ग्लोबल वार्मिंग व उसके प्रभावों पर जागरूकता में संस्था की भूमिका)

Srl		Ans.	R	%	U	%	Total	%	Chi –Sq
1	पर्यावरण अध्ययन ने ग्लोबल वार्मिंग पर आपकी जानकारी व जागरूकता में वृद्धि की है?	Y	5	20%	7	28%	12	24%	.792
		N	16	64%	14	56%	30	60%	
		DK	4	16%	4	16%	8	16%	
2	सरकार द्वारा संस्थान में आयोजित कार्यक्रमों से ग्लोबल वार्मिंग पर जागरूकता बढ़ी है?	Y	3	14%	7	28%	10	20%	.103
		N	19	74%	16	64%	35	70%	
		DK	3	12%	2	8%	5	10%	
3	संस्थान की गतिविधियों ने ग्लोबल वार्मिंग पर जागरूकता बढ़ाई है?	Y	6	24%	9	36%	15	30%	.165
		N	18	72%	12	48%	30	60%	
		DK	1	4%	4	16%	5	10%	

Y=हॉ, N=नही,DK= कह नही सकते R= ग्रामीण, U=नगरीय

सारणी–3 से स्पष्ट हो रहा है कि नगरीय और ग्रामीण दोनो प्रकार के अधिकांश छात्र स्वीकार करते है कि पर्यावरण अध्ययन विषय से उनकी ग्लोबल वार्मिंग सम्बन्धी जानकारी में कोई वृद्धि नही हुई है। इसी प्रकार सरकारी आयोजनों और महाविद्यालयीय गतिविधियों के सम्बन्ध में नगरीय और ग्रामीण दोनो ही छात्र मान रहे है कि इससे उनकी ग्लोबल वार्मिंग पर जागरूकता में कोई वृद्धि नही हुई है। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि नगरीय और ग्रामीण स्थिति का महाविद्यालीय शिक्षा और संस्था में होने वाली गतिविधियों से कोई तार्किक सम्बन्ध नही है जैसा काई स्वायर परीक्षण से भी स्पष्ट है। अतः हम इस निष्कर्ष पर जा सकते है कि यदि संस्था , सरकार और विश्वविद्यालय की ओर से गम्भीर प्रयास किये जाये तो ग्रामीण व नगरीय दोनो ही प्रकार के छात्रों में ग्लोबल वार्मिंग पर जागरूकता लायी जा सकती है।

Table- 4

Notice of Students towards Environmental Changes in Nearby Areasin Last Five Years

(निकट क्षेत्रों में पर्यावरणीय परिवर्तनों सम्बन्धी संज्ञान)

Srl		Ans.	R	%	U	%	Total	%	Chi –Sq
1	तापमान में तीव्र वृद्धि?	Y	11	44%	20	80%	31	62%	.000**
		N	10	40%	2	8%	12	24%	
		DK	4	16%	3	12%	7	14%	
2	जल स्तर निम्न हुआ है?	Y	7	28%	16	64%	23	46%	.003**
		N	13	52%	2	8%	15	30%	
		DK	5	20%	7	28%	12	24%	
3	कुए, तालाब, नालों व नदियों में पानी में कमी आयी है?	Y	18	72%	7	28%	25	50%	.008**
		N	5	20%	12	48%	17	34%	
		DK	2	8%	6	24%	8	16%	
4	वृक्षो की कटान बढ़ी है?	Y	18	72%	8	32%	26	52%	.015*
		N	4	16%	7	28%	11	22%	
		DK	3	12%	10	40%	13	26%	

Y=हॉ, N=नही,DK= कह नही सकते R= ग्रामीण, U=नगरीय

** → Significant at1 % level;* → Significant at 5 % level

सारणी–4 से बहुत महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हो रहे है। नगरीय और ग्रामीणों के उत्तरों की तुलना से यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि पिछले 5 वर्षो में नगरीय क्षेत्रों के छात्रों ने ग्रामीण छात्रों की तुलना में तापमान में तीव्र वृद्धि महसूस की है जो इस बात का सूचक है कि ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव नगरीय क्षेत्र में बहुत तेजी से हो रहा है। नगरीय क्षेत्रों में बढता प्रदूषण और ऊर्जा की खपत इसके लिए उत्तरदायी हो सकते है। और इसी कारण ग्रामीण क्षेत्रों में तापमान वृद्धि की दर इतनी तीव्र नही है। जल स्तर पर उत्तरदाताओं की तुलना से स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्रों में जल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है। ग्रामीण क्षेत्रो में यह गिरावट काफी कम है। इसका स्पष्ट कारण यह हो सकता है कि नगरों में जल स्रोतो का दोहन अत्याधिक होता है जबकि जल को भूमि के नीचे पहुचने के लिए कोई व्यवस्था नही है। गांव में वर्षा का जल सरलता से भूमि में समाहित हो जाता है इसीलिए वहॉ जल स्तर की गिरावट कम है। जल राशियों से सम्बन्धित उत्तरों को देखने से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कुॅए, तालाब जैसे स्रोतो में पानी की मात्रा तेजी से घटी है यह एक चिन्ता का विशय है जिसका सीधा प्रभाव कृषि कार्यो पर पड़ सकता है। नगरीय क्षेत्र में जल राशियों की उपलब्धता बहुत कम रहती है सम्भवतः इसीलिए नगरीय छात्रों की प्रतिक्रियाओं में ग्रामीण छात्रों से बहुत भिन्न है। वृक्षो की कटान पर भी महत्वपूर्ण निष्कर्ष देखे जा सकते है। ग्रामीण छात्रों का बहुमत मान रहा है कि वृक्षो की कटान पिछले वर्षो में तीव्र हुई है जबकि नगरीय छात्र की प्रतिक्रिया ग्रामीणों के विपरीत है इसका मुख्य कारण नगरीय क्षेत्रों में वृक्षों की संख्या कम रहना है और प्रशासनिक और शासकीय संस्थाओं के नगरों में होने के कारण नगरों मे वृक्षो की कटान सरल नही है जबकि गांव मे प्रशासन व वन विभाग का भय कम रहने के कारण वृक्ष काटे जाने की सम्भावना अधिक है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सीतापुर क्षेत्र में जल स्तर, वृक्षो की कटान, जल राशियॉ और नगरीय तापमान में तीव्र वृद्धि चिन्ता का विषय है और ग्लोबल वार्मिंग को इससे बढावा मिल रहा है। सकारात्मक बात यह है कि नगरीय व ग्रामीण दोनो ही छात्र अपने क्षेत्रों में हो रहे पर्यावरणीय परिवर्तनों के बारे में सही अनुमान रखते है और यदि उन्हे ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले खतरों और उनसे निपटने के उपायों और कार्यक्रमों से सम्बद्ध कर दिया जाये तो उनकी इस जानकारी का समुचित लाभ मिल सकता है।

Table- 5

Vehicles and Electronics regarding Information

(वाहनों और इलेक्ट्रानिक उपकरणों सम्बन्धी संज्ञान)

Srl		Ans.	R	%	U	%	Total	%	Chi -Sq
1	फ्रिज व ए0सी0 जैसे इलेक्ट्रानिक उपकरण वायुमण्डल के तापमान में वृद्धि कर रहे है?	Y	12	48%	19	76%	31	62%	.094*
		N	9	36%	3	12%	12	24%	
		DK	4	16%	3	12%	7	14%	
2	आपके क्षेत्र में वाहनों की संख्या और उनसे उत्पन्न प्रदूषण के स्तर में वृद्धि कर रहे है?	Y	18	72%	20	80%	38	76%	.200
		N	4	16%	5	20%	9	18%	
		DK	3	12%	0	0%	3	6%	

Y=हॉ, N=नहीएDK= कह नही सकते R= ग्रामीण, U=नगरीय ' → Significant at 5 % level

इलेक्ट्रानिक उपकरण और उनसे निकलने वाली तीव्र उष्मा वायुमण्डल के तापमान को बढ़ा दे रही है। इस विचार से नगरीय और ग्रामीण दोनो प्रकार के छात्र सहमत है किन्तु नगरीय छात्रों में सहमत का प्रतिशत ग्रामीण छात्रों से बहुत अधिक है इसका कारण नगरों में इन उपकरणों का बहुतायत से प्रयोग किया जाना है। नगरीय छात्र अपने दैनिक जीवन में इन उपकरणों के प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों को देख रहे है जबकि ग्रामीण छात्रों में अधिकांश केवल सामान्य जानकारी के आधार पर ऐसा कह रहे है। वाहनों की वृद्धि और उनसे उत्पन्न प्रदूषण के बारे में नगरीय और ग्रामीण दोनो प्रकार के छात्रों की सोच एक समान है। दोनो ही सहमत है कि वाहनों की संख्या और उससे उत्पन्न प्रदूषण निरन्तर बढ़ रहा है जो कि ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का एक बड़ा कारण है। जिसका निदान ढूढ़ने की आवश्यकता है।

Table -6

Use of Solar Energy as an Option

(सौर ऊर्जा का विकल्प के रूप में प्रयोग)

Srl		Ans.	R	%	U	%	Total	%	Chi –Sq
1	क्या आप सौर ऊर्जा का प्रयोग करते है?	Y	3	12%	1	4%	4	8%	.297
		N	22	88%	24	96%	46	92%	
2	क्या सौर ऊर्जा का प्रयोग करने के इच्छुक है?	Y	20	80%	11	44%	31	62%	.012*
		N	1	4%	5	20%	6	12%	
		DK	4	16%	9	36%	13	26%	
3	सौर ऊर्जा के प्रयोग में समस्यायें?	Costly	19	76%	14	56%	33	66%	.056*
		Maintenance	0	0%	5	20%	5	10%	
		Other	6	24%	6	24%	12	24%	

Y=हॉ, N=नही,DK= कह नही सकते R= ग्रामीण, U=नगरीय * → Significant at 5 % level

सारणी–6 सौर ऊर्जा को जीवाश्म ईधन से उत्पन्न ऊर्जा के विकल्प के रूप में प्रयोग किये जाने की सम्भावनाओं पर नगरीय व ग्रामीण छात्रों की प्रतिक्रियाओं को प्रदर्शित करती है सारणी से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में सौर ऊर्जा का प्रयोग करने

वालो की संख्या नगण्य है लेकिन सकारात्मक संदेश यह है कि अधिकांश उत्तरदाता इसके प्रयोग के इच्छुक है। नगरीय क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा का प्रयोग करने वालो का प्रतिशत यद्यपि कुछ अधिक है लेकिन यह आशाजनक नही है। यह देखना रोचक है कि एक ओर जहॉ ग्रामीण उत्तरदाताओं का बड़ा प्रतिशत सौर ऊर्जा के प्रयोग का इच्छुक है वही नगरीय क्षेत्रों में उत्तरदाता इसके लिए बहुत इच्छुक दिखाई नही देते। इसका सीधा कारण यह हो सकता है कि नगरीय क्षेत्रों में पर्याप्त विद्युत आपूर्ति होती है और इनवर्टर आदि माध्यमो से उनकी उर्जा आवश्यकताये पूरी हो जाती है जिसका गांव में अभाव है। इसके अतिरिक्त लोगो के छोटे आवास और फ्लैट संस्कृति भी सौर ऊर्जाके प्रयोग में समस्या उत्पन्न करती हैलेकिन बेहतर होगा कि नगरीय क्षेत्रो में सौर ऊर्जा का अधिक बढावा दिया जाये जिससे ग्लोबल वार्मिंग को रोकने मे मदद मिलेगी। सौर ऊर्जा के प्रयोग की बडी समस्या जिस पर नगरीय और ग्रामीण दोनो ही उत्तरदाता सहमत है इसका अत्याधिक खर्चीला होना है। नगरों की तुलना में ग्रामीण लोगों की आय कम है ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है सम्भवतः इसीलिए ग्रामीण उत्तरदाताओं का अधिक प्रतिशत इसके खर्चीले होने को मुख्य समस्या मान रहा है। अन्य कारणो में वर्षा और शीत काल में इसके लाभदायी होने में संदेह हो सकता है। निष्कर्ष यह है कि सौर ऊर्जा नगरीय और ग्रामीण दोनो क्षेत्रों में एक लोकप्रिय ऊर्जा माध्यम के रूप में विकसित किया जा सकता है और निश्चय ही इससे ग्लोबल वार्मिंग की चुनौतियो से निपटने में बहुत अधिक मदद मिलेगी।

निष्कर्ष

- महाविद्यालय में पर्यावरणीय शिक्षा, युवा छात्रों मे पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग के सम्बन्ध में जागरूकता उत्पन्न करने में असफल रही है।
- पर्यावरणीय अध्ययन की व्यवहारिकता पर विश्वविद्यालय का कोई ध्यान नही है और छात्र भी इसे औपचारिकता मात्र उर्त्तीण कर रहे है।
- अपने आस–पास के पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों के बारे में छात्रों को संज्ञान है कितने वे सौद्धान्तिक रूप में ग्लोबल वार्मिंग की अवधारणात्मक स्वरूप से अपरिचित है और उसे भयावह व होने वाले खतरे से अनभिज्ञ है।ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव नगरीय क्षेत्र में बहुत तेजी से हो रहा है। नगरीय क्षेत्रों में बढता प्रदूषण और ऊर्जा की खपत इसके लिए उत्तरदायी हो सकते है।
- सीतापुर क्षेत्र में जल स्तर, वृक्षो की कटान, जल राशियॉ और नगरीय तापमान में तीव्र वृद्धि चिन्ता का विषय है और ग्लोबल वार्मिंग को इससे बढावा मिल रहा है।
- शहरीग्रामीण छात्रों में जागरूकता का स्तर भिन्न–भिन्न है।
- सौर ऊर्जा को जीवाश्म ईधन से उत्पन्न ऊर्जा के विकल्प के रूप में खर्चिली उपयुक्ति होने के कारण आज सौर ऊर्जा प्रयोग करने वाले छात्रों का प्रतिशत बहुत कम है। किन्तु सकारात्मक संकेत यह है कि अधिकांश छात्र–छात्रायें सौर ऊर्जा प्रयोग करने के इच्छुक है।

सुझाव

1. पर्यावरण शिक्षा को व्यवहारिक पक्ष से जोडा जाये।
2. संस्थाओं, सरकारी मशीनरी एवं विश्वविद्यालयों को पर्यावरण शिक्षा और ग्लोबल वार्मिंग जैसे मुद्दो को अधिक गम्भीरता से लेते हुए ऐसे पाठ्यक्रम व गतिविधियों का सृजन करना चाहिए जिससे युवा छात्रों में इसके लिए चिन्ता उत्पन्न हो और वे स्वौच्छिक रूप से इन चुनौतियों से निपटने हेतु आगे आये।
3. ग्रामीणो को पर्यावरण के बढ़ते खतरों के प्रति जागरूक करने हेतु विशेष प्रयास करने होगे।
4. सौर ऊर्जा के अनुसंधान को अधिकतम बढ़ावा दिया जाये जिससे छोटे व कम लागत के संयन्त्रों से वर्ष भर सौर ऊर्जा का लाभ प्राप्त किया जा सके।
5. वृक्षारोपण, जल संरक्षण और प्रदूषण नियत्रण के लिए सरकारी एजेन्सियों और गैर सरकारी एजेन्सियों के साथ छात्रों को अभियानों के माध्यम से जोडा जाना चाहिए। सरकारी सेवाओं में छात्रों के पर्यावरणीय योगदान हेतु भारांक की व्यवस्था करके उन्हे इस ओर प्रोत्साहित किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1991 में सर्वोच्च न्यायलय में ए0सी0 मेहता ने पर्यावरण शिक्षा पर जनहित याचिका दायर की थी, रिट संख्या–(सिविल) संख्या 860/1991

D. Read, A. Bostrom, M. Granger Morgan, B. Fischoff, and T. Smuts, *"What do people know about climate change? 2. survey studies of educated laypeople*," Risk

Analysis, 14 no. 6 (1994): 971–981. 8 (Internet)

सिंघल, एस0सी0 सिंघल(,2008)*अन्तर्राष्ट्रिय कानून*, आगरा, एल0एन0ए0 प्रकाशन,

जिला सांख्यिकी पत्रिका 2012, अर्थ और सांख्यिकी कार्यलय सीतापुर।

सीतापुर विकास पुस्तिका 2014

फडिया, बी0एल0 (2006) *समकालीन राजनीतिक मुद्दे*, आगरा, साहित्य भवन प्रकाशन

www.un.org